(दोहा)

यह जिनमन्दिर माल शुभ, जो भव कंठ धराय।
सो ता कीरत और कों, सुर हरषै जस गाय।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

इति पूर्वदिशा पूजा समाप्त

अथ दक्षिणदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(चौपाई)

नन्दीश्वर दक्षिण दिस जाय, त्रयोदस जिनके थान सुठाय।
ऐसी शक्ति तो दीसे नाहिं, तातैं जजौं थाप इह ठाहिं।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(गीता छन्द)

नीर नीकौ क्षीर दधि सो जीव बिन प्राशुक इसौ।
धर कनक झारी माहिं कर ले कहौ गुन मुख बुधि जिसौ।।

जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुध तें लाय जल सुखदाय हैं।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एक अंजनगिरि चत्वारि दधिगिर्यष्ट-रतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घसि नीर चन्दन बावना शुभ गन्ध की धारा सही।
लै सुभग पातर विनय सेती जानके तीरथ मही।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय चन्दन लायके थुति गाय हैं।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एक अंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्ट-रतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत सु उज्ज्वल खण्ड नाहीं शुद्ध नख सिख जानिए।
फिर धोय निरमल धार पातर आपनै कर आनिए।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय शुद्ध कर अखत तें हित लाय हैं।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल प्रासुक कनक चांदी तथा सुरतरु के सही।
लै माल तिनकी करी चित दे आपने करमें लही।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय फूल सु लाय अति सुख पाय हैं।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सुन्दर सुभग रसना लाइया हित कारने।
ले आपने कर धार पातर भूख को मद मारने।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुधि नैवेद्य शुभ गुन गाय हैं।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय अन्ध नाशक महाजोत धरा सही।
धर भले पातर आरती शुभ आपनै कर में लही।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुध कर दीप तें जस गाय हैं।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर धूप दस विध गन्ध लैके पीस सकल मिलाय जी।
हों आपने घर हरष धरके अगनि खेवन आय जी।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुधतें धूप सूं जिन पाय हैं।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल बदाम सु ले सुपारी खारका सुख–दायना।
इन आदि और अनेक फल ले सुभग सब मन भायना।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय शुभ आयकर फल लाय हैं।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले दीप धूप फला सही।
कर अरघ सब द्रव्य एकठे करि आपनै कर में लही।।
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय शुभकर अरघतें थुति गाय हैं।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(गीता छन्द)

नन्दीश्वर दक्षिण दिसा को जान अंजनगिर सही।
तिस ऊपरै इक थान जिन है पाप हरने की मही॥
तहाँ देव ही तो जाय पूजें और को मौसर कहाँ।
हम जानि पुन्य के लोभ काजै भाव अरघ जजैं इहाँ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशांजनगिरिसम्बन्धिजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप दक्षिण दिस नन्दीश्वर अंजन गिरपूरब मही।
लखि वापिका मध शिखर दधिगिर तास पै जिन थल सही॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही जु वापिक तनै मुख पै जानि रतिकर आदि जी।
ता ऊपरै जिन थान है शुभ जजें सब अघ वादि जी॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही जु वापिक तना रतिकर दूसरा गिर जानिए।
ता ऊपरै जिन थान तीरथ अकिरतम ध्रुव थानिए॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन सु गिर दक्षिण दिसा का तास की दक्षिण मही।
है वापिका मध शिखर दधिगिर तास पै जिनग्रह सही॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही जु वापिक मुख सु ऊपरि कही पहिला रतकरा।
ता ऊपरै जिन भवन दीरघ किए पापन का हरा।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिका इस तनै मुख पै कहा रतिकर दूसरा।
तिस शीश थानक जिनेसुर का देखतैं पातक हरा।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिणदिस अंजनगिरि की पच्छिम दधिगिर वापिका।
तहाँ थान देव जिनेन्द्र जू का करो भव्य तिन जापिका।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वापिका के मुखै रतकर नाम प्रथम सुगिर सही।
तिस ऊपरे जिन भवन अघहर सकल मंगल की मही।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण अंजन पच्छिम वापिका मुख कै रतकर हुजा।
ताके सु ऊपर भवन जिनको एक ही धर्म की ध्वजा।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप नन्दी दक्षिण अंजन तास उत्तर बावरी।
ता मध्य दधिगिर शीश जिन थल भव्य संग मंगल करी।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरि-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या बावरी मुख जान रतिकर प्रथम ही सुखदाय जी।
ताके सु ऊपर जोय मन्दिर देव जिनका पाय जी॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही जु वापिक नोक ऊपर जान रतिकर दूसरा।
तिस जाय मस्तक भला राजै देव जिनमन्दिर धरा॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

दक्षिण अंजन दधिगिरि चव तसु रतकरा।
इन पै इक इक थान देव जिनका खरा॥
तहाँ देव ही जजैं जाय गुन गाय हैं।
हम इहाँ पूजैं अर्घ भावना भाय हैं॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिमुखाष्ट-रतिकरेतित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर दक्षिण दिसा, कहे सु जे जिनगेह।
हम पूजैं भावैं यहाँ सुर जजहैं कर नेह॥१॥

(वेसरी छन्द)

नन्दीश्वर तौ दीप अपारा। ताकी दक्षिण दिस सुखकारा।
अंजनगिरि तौ एक बताया। ता ऊपर चव वापिक भाया॥२॥

तिन वापिक के मध्य अनूपा। एक एक दधिगिरि शुभ रूपा।
तिन वापिन की नोंकन ठाहीं। दोय दोय रतिकर गिर पांहीं॥३॥

तुंग व्यास रचना है तैसी। पूरब दिसा कही थी जैसी।
यहाँ वहाँ फेर रंच नहिं जानों। दिसा विशेष और नहिं मानों।।४।।

यह सब थान तीर्थ हैं सोई। देखत दरस पाप क्षय होई।
नाम लियैं जिय मंगल पावै। सो पूजन महिमा किम गावै।।५।।

या पूजा फलतें सुन भाई। शोक दोष उपजै न कदाई।
सकल व्याधि तिनकी मिट जावै। जो जिय यह पूजा मन भावै।।६।।

याहि पूजा के परभावा। सिरीपाल तन कुष्ठ गमावा।
सो आतम सुरके सुख पावै। जो जिय यह पूजा मन भावै।।७।।

होय फेर चक्री बलभद्रा। कामदेव आदिक सुखहद्रा।
कै शिव वा अहमिंदर जावै। तै जिय यह पूजा मन भावै।।८।।

फेर चवै मोटे पद पावै। राज्य भोग फिर तप मति लावै।
काम कर्म शिवरूप कहावै। ते जिय यह पूजा मन भावै।।९।।

और कहाँ फल अधिक सु भाई। तातैं नन्दीश्वर चल जाई।
जो जग फेर न आवै जावै। ते जिय यह पूजा मन भावै।।१०।।

(दोहा)

तेरह गिर पै जिन भवन, तेरह ही मन लाय।
नन्दीसुर दच्छिन तरफ, सो हम भाव जजाय।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति दक्षिण दिशा पूजा समाप्त

(अडिल्ल)

जो इह पूजन सार करे अभ्यासने,
सकल तीर्थकी वंदन कीनी तासने।
रोग किलेश नशे धन धान्य तु आवहीं,
अनुक्रम सों शिवराज परमपद पावहीं॥१२॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ *इति श्री त्रैलोक्यजिनालय पूजा समाप्त* ॥

अथ कुण्डलद्वीप के बीच कुण्डलगिरि के चारों दिश चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा

अथ स्थापना

(मदअवलिप्त कपोल छन्द)

कुण्डल नाम द्वीप ग्यारमो, ताके बीच कहो गण धार।
घेरे आधे द्वीप कनक द्युति, कुण्डलगिर कुण्डल आकार॥
चारों दिशा चार जिनमन्दिर, सुरपति जजत भक्ति उर धार।
हम तिनकी आह्वानन विधि कर, जिनपद पूजत अष्ट प्रकार॥१॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीप मध्ये कुण्डलगिरिके चारों दिशा चार जिनमन्दिरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक

(चाल प्रमादिसन की)

क्षीरोदधि उनहार सु, जल भरि कंचन झारी।
जिन सन्मुख दे धार, जरा मरनादि निवारी॥
सुरपति पूजन जाहिं, शिखर कुण्डल गिरवरके।
हमें शक्ति सो नहिं, जजत पद श्री जिनवरके॥२॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीप मध्ये कुण्डलगिरि पर्वतके पूर्वदिश रुचिक नाम।१। दक्षिण दिश रुचिकप्रभ नाम।२। पश्चिमदिश हिमवन नाम।३। उत्तरदिश मन्दिर नाम ।४। सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो जलं नि०

मलयागिर घस लाय सु, चन्दन केसर झारी।
जजत जिनेश्वर पाय, सो आताप निवारी। सुरपति० ॥३॥

ॐ ह्रीं०। चंदनं।

चन्द्र किरन सम स्वेत, अमल अक्षत ले ताजे।
जिनपद पुंज सु देव, अक्षय पद पावन काजे। सुरपति० ॥४॥

ॐ ह्रीं०। अक्षतं।

वरन वरनके फूल धरे, बहु परमलताई।
हरत मदन मद शूल, चरन जिनराज चढ़ाई। सुरपति० ॥५॥

ॐ ह्रीं०। पुष्पं।

नानाविध पकवान, सिताधृत मिश्रित झारी।
श्री जिनचरन महान, जजत तन क्षुधा निवारी। सुरपति० ॥६॥

ॐ ह्रीं०। नैवेद्यं।

दीपक ज्योति जगाय, दशों दिश होत उजारा।
मोह तिमिर क्षय जाय, जजत पद जिनवर केरा। सुरपति० ॥७॥

ॐ ह्रीं०। दीपं।

दस विध धूप सुगन्ध, धूम ऊरध सुखदाई।
हरत कर्मको बन्ध, दहत जिन सन्मुख जाई।
सुरपति पूजन जाहिं, शिखर कुण्डल गिरवरके।
हमें शक्ति सो नहिं, जजत पद श्री जिनवरके॥८॥

ॐ ह्रीं०। धूपं।

फलकी जात अपार, मधुर गुण कोमलताई।
मोक्ष सु पद दातार, जजत जिनवर पद भाई। सुरपति० ॥९॥

ॐ ह्रीं। फलं।

जल फल द्रव्य मिलाय, अर्घ भर कंचन थारी।
जजत जिनेश्वर पाय, लाल तिनकी बलिहारी। सुरपति० ॥१०॥

ॐ ह्रीं। अर्घं।

अथ प्रत्येकार्घ

(कुसुमलता छन्द)

कुण्डलगिरकी पूरव दिशमें, पांच कूट भाषे जिनराय।
चार शैलके अन्त बताए, उर ले एक रही द्युति छाय॥
सिद्धकूट तसु नाम रुचिक है, तापर जिनमन्दिर सुखदाय।
सुरु सुरपति नित पूजत तिनको, हम ले अर्घ जजत जिनपाय॥१॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरि पर्वतके पूर्वदिश रुचिक नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं नि०

दक्षिण दिश कुण्डलगिर केरी, पाँच कूट सोहैं सुखकार।
पर्वत अन्त चार कंचनमई, पहली ओर एक उर धार॥
सिद्धकूट तसु नाम रुचिकप्रभु, तापर श्रीजिनभवन निहार।
अमर अमरपति जजत अष्टविध, हम पूजत नित अर्घ संवार॥२॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके बीच दक्षिणदिश रुचिकप्रभ नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं।

कुण्डलगिरि पश्चिम दिशा सौहे, पाँच कूट कंचन द्युति ताम।
बाहर भाग चार भूपतिके, बीतर एक सरस सुख ठाम॥
तहाँ जिनभवन अनुपम सुन्दर, सिद्धकूट तसु हिमवन नाम।
देव सचीपति वसुविध पूजत, हम ले अर्घ जजत जिनधाम॥३॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके पश्चिमदिश हिमवन नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा सु चार गिर कुण्डली, पांच कूट सोहैं सु रिशाल।
गिरके अन्त चार सुर निबसैं, भीतर भाग एक सु विशाल॥
मन्दिर नाम सु सिद्धकूट पर, जिनमन्दिर सुर जजत त्रिकाल।
वसुविध अर्घ बनाय गाय गुण, जिन घर पूजत भविलाल॥४॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके उत्तरदिश मन्दिर नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

कुण्डलगिर चारों दिशा, श्री जिनभवन विशाल।
जिनपद शीश नवायकैं, अब वरनूं जयमाल॥१॥

(पद्धरी)

जै एक खरब वसु अरब जान, जै कोड़ पचासी अधिक मान।
जोजन सु छिहत्तर लाख सार, इक इक दिशको आयाम धार॥२॥

जै कुण्डल द्वीप दिपै रिशाल, तिस बीच सु कुण्डलगिर विशाल।
चहुं ओर द्वीप आधो सुघेर, कुण्डलवत गोल परो सुहेर॥३॥

जोजन पचहत्तर सहस अंग, उन्नत कंचन के वरन रंग।
जै गिर ऊपर चहुं दिश जु चार, जै सिद्धकूट जिनभवन सार॥४॥

जै रतनमई प्रतिमा जिनेश, शतआठ अधिक वंदत सुरेश।
सब समोसरन रचना निहार, वरनत सुर गुरु पावें न पार॥५॥

जै चतुरनिकाय जु देव आय, जै जिन गुन गावैं प्रीत लाय।
जै दुंदुभि शब्द बजें सु जोर, अनहद सारे बारह किरोर।।६।।

जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजै मृदंग, निरजर निरजरनी नचैं संग।
ता थेई थेई थेई धुन रही पूर, जगतारन जिनवरके हजूर।।७।।

जिन चरन कमल पूजत सुरेन्द्र, सब देव करत जय जय जिनेन्द्र।
मन वचन काय भुवि शीश लाय, भविलाल सदा बलबल सुजाय।।८।।

(धत्ता दोहा)

कुण्डलगिर जिनभवन की, पूजा बनी महान।
जो वांचे मन लायकैं, पावै अविचल थान।।९।।

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके चतुर्दिश जिनमन्दिरेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ आशीर्वादः

(कुसुमलता छन्द)

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम, ताको पाठ पढ़ै मन लाय।
जाके पुन्य तनी अति महिमा, वरनन को कर सकै बनाय।।
ताके पुत्र पौत्र अरु संपत, बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय।
यह भव जस परभव सुखदाई, सुर नर पद लहि शिवपुर जाय।।१०।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

इति श्री कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरि की चारों दिशा चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा सम्पूर्ण।